VISHVA-JYOTI R. N. NO. 1/57

ISSN 0505-7523
REGD. NO. PB-HSP-01
CURRENCY PERIOD: (1.1.2015 TO 31.12.2017)

फरवरी–2017

विश्वज्योति

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर

एक प्रति का मूल्य : १० रुपये

Scanned with CamScanner

ऋतुसंहार में वर्षा का वर्णन

–डॉ० डायालाल मालदेभाई मोकरिया

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के अद्वितीय कवि हैं। उनकी वाणी जिस किसी भी विषय को स्पर्श करती है वही अखंड रसास्वाद कराने लगती है। इसीलिए अपनी सभी रचनाओं से वे आज भी विश्व भर में प्रशंसा प्राप्त कर रहे हैं। उनकी सातों कृतियों में से हम कोई भी कृति लें, उनमें रसभाव पूर्णतम है। ऋतु के सन्दर्भ में देखें तो उनके ऋतुसंहार काव्य में वर्षा की मनोरम कल्पना दिखाई पड़ती है।

भारत कृषिप्रधान देश है। कृषि का आधार वृष्टि होती है। इसलिए मेघ को राजा कहा गया है। महाकवि कालिदास ने भी ऋतुसंहार में इस रूपक को काव्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि- अब वर्षाऋतु आ चुकी है। यह राजा के समान सजधज कर आ गई है। बरसते मेघ हाथी हैं, बिजली पताका है और मेघगर्जना नगाडा है।[1] प्रणयीजनों के संदर्भ में सोचें तो यह ऋतु कामीजनप्रिय है। मेघदूत में भी कवि बादलों को हाथी का रूपक देते हैं।[2] हाथी में अधिक शक्ति होती है। मेघ की शक्ति भी अमाप है। वह जहाँ जाता है, वहाँ सब को अपनी शक्ति से प्रभावित करता है। ऋतुसंहार में कवि कालिदास ने पशु, पक्षी, मानव सहित संपूर्ण प्रकृति पर छाये हुए मेघ के साम्राज्य का वर्णन किया है।

प्रथम वर्षा होती है तब मिट्टी की महक बहुत अच्छी लगती है। इतना ही नही बारिश का पानी धीरे- धीरे चलता है। कवि ने जलप्रवाह की कल्पना भी सर्प की गति से की है।[3] वर्षारानी का नया जल पृथ्वी पर बहता है; तब वह कीटों, धूल और कचरे-कूडे से भरा हुआ होता है। जब यह सब लेकर चलता है तब एक टेढ़ा भुजंग जैसा लगता है। जब वर्षा होती हैं तब उसकी जलधारा शरीर पर लगती है। उसका रूपक देते हुए कवि लिखता है कि मानों प्रवासियों पर इन्द्रधनुष से ताने हुए बाण पड़ रहे हैं। वर्षा विरहीजनों को अतिशय पीड़ा पहुंचाती है जिसका मनोवैज्ञानिक निरूपण भी कवि प्रस्तुत करते हैं।

१. ऋतुसंहार, २/१ २. मेघदूत, १/२ ३. ऋतुसंहार, २/१३

Scanned with CamScanner

वर्षाऋतु के समय आकाश और पृथ्वी दोनों की शोभा दर्शनीय होती है। आकाश काले बादल से भर जाता है, वहां कवि कल्पना करता है कि वह कहीं नीले कमल जैसा, कहीं खूब चिकने काजल जैसा और कहीं गर्भवती स्त्री के स्तनाग्र जैसा लगता है।[४] यह कवि की सौंदर्यदर्शी दृष्टि की देन है। पृथ्वी पर प्रथम वर्षा के बाद धीरे-धीरे दीखाई पड़ते तृणों के अंकुरो को कवि वैदूर्य की शलाकाओं के रूप में वर्णित करते हैं और इन्द्रगोप से तो पृथ्वी रंगीन रत्नों से सजी एक सुन्दर नायिका जैसी दिखाई पड़ती है।[५] अपने प्रियतम सागर को मिलने के लिए उत्सुक बनी हुई नदियों का भी कवि ने बड़ा स्वाभाविक वर्णन किया है। नदियां बहुत तीव्र गति से बह रही हैं। किनारों पर वृक्ष भी बहने लगे हैं। यहां नदियों का उत्साह के साथ मानवीय संवेदनाओं का भी कवि ने मार्मिक आकलन किया है।

कवि वर्षाकाल में पशु-पक्षियों की भावोर्मियों को भी अच्छी तरह से प्रकट करते हैं। मेघ को देखकर मत्त मयूर नृत्य करते है, मेघध्वनि सुनकर मयूर अपने कलापों को फैलाते शोभायमान होते हुए संभ्रमपूर्वक आलिंगन में लगे हैं। इतना हि नहीं अपितु नृत्यरत मयूरों के कलापकों को नीलकमल समझकर भौरे उन पर टूटे पड रहे हैं।[६] मेघगर्जना सुनकर जंगली हाथी भी मदोन्मत्त हो गये हैं, हिरनों को सर्वत्र चारा सुलभ हो गया है पर वे मेघगर्जना से डरकर रेतवाली भूमि पर, इकट्ठे हो रहे हैं। इधर-उधर जाते हुए और झुके हुए मेघ को देखकर चातक पक्षी जल की याचना कर रहे हैं। इस तरह कवि ने पशुपक्षियों में मेघ का प्रभाव बताया है। उनमें दिखाई देने वाले ये भाव मानव-मन को भी गहराई से छूते हैं।

वर्षाऋतु में मनुष्यों में भी जो मनोभाव दिखाई देते हैं उनका कवि ने मार्मिक वर्णन किया है। मेघ प्रवासियों को दु:सह्य लगते हैं। प्रोषितभर्तृका नायिकाएं भी निराश हो जाती हैं। माला, आभूषण और अनुलेप छोड़कर केवल रोने ही लगती हैं। अभिसारिका नायिकाएं तो मेघ के कारण रात्रियों के प्रखर अंधकारमय होने पर भी अभिसरण करती हैं। क्योंकि मेघ की प्रिया बिजली उनका मार्गदर्शन करती जा रही है। स्त्रियां कामीजनों में आकर्षण पैदा कर रही हैं, नारियां मेघगर्जना सुनकर सन्तप्त हो जाती हैं। इसीलिए गुरुजनों के बीच से उठकर वे अंगों पर चंदन का लेप करने लगती हैं।[७] वह अपने शरीर पर विविध आभूषण धारण करती

४. ऋतुसंहारम, २/२
५. वही, २/५
६. वही, २/६
७. वही, २/२१

Scanned with CamScanner

हैं। महाकवि मेघदूत में लिखते हैं कि मेघदर्शन से सुखी व्यक्ति का भी चित्त चलित हो जाता है, तो विरह से व्यथित व्यक्तियों के विषय में तो कहना ही क्या है ?[८] इस तरह कवि ने अपने वर्णन में मानवीय भावों का सूक्ष्मता से निरूपण किया है।

मेघ के आगमन से संपूर्ण संसार में नवचेतना आ जाती है। कवि ने स्वयं वर्षावर्णन के अन्त में उपसंहार में कहा है कि - बहुत-सी विशेषताओं से रमणीय कामियों का चित्तहारी, तरुशाखा और लताओं का निःस्वार्थ बन्धु यह वर्षाफल प्राणियों का प्राण बना हुआ हैं।[९] वर्षाऋतु की महिमा कालिदास ने इस तरह ऋतुसंहार काव्य में बताई हुई हैं। यद्यपि कवि ने ऋतुसंहार में प्रथमदृष्टि से वर्षाऋतु का स्वाभाविक वर्णन किया है, किन्तु यह वर्णन सार्वजनिक बन गया है। यहां तत्त्वज्ञान के अन्वेषकों को तत्त्वज्ञान दृष्टिगोचर होगा और रसिक जनों को काव्य दिखाई पड़ेगा। कवि ने मनुष्यों के साथ जीवजन्तु, पशुपक्षी, वृक्ष, लता सब का मानवीकरण करके मेघ के प्रभाव से मानव कैसा हो जाता है ; यह बात मार्मिकता से प्रस्तुत की है। प्रकृति के पुजारी और व्यंजना के आचार्य महाकवि कालिदास का वर्षावर्णन नितांत आस्वादनीय है।

–साहित्यसंकाय, श्रीसोमनाथसंस्कृत यूनिवर्सिटी, वेरावल (गुजरात)

८. मेघदूत, १/३

९. ऋतुसंहार, २/२८

Scanned with CamScanner